शैक्षिक सम्बलन हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Integrated Innovation Programme for Educational Reinforcement: An Analytical Study

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय

गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर

को

पी-एच.डी.(शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप

शोधकर्ता:

विजेन्द्र सिंह

iase
Deemed
university

शोध निर्देशक :

डॉ. राजकुमार माली

प्रवक्ता (शिक्षा)

बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई)

गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

जिला-चूरू (राजस्थान) - 331401

2016

शोध – प्रारूप

1. शोधकर्ता का नाम : विजेन्द्र सिंह

2. संस्थान का पता : बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई), गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

3. शोध विषय : *शैक्षिक सम्बलन हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन*
Integrated Innovation Programme for Educational Reinforcement: An Analytical Study.

1. –प्रस्तावना :–

शैक्षिक सम्बलन एक शिक्षा को उंचा उठाने के लिए किए विभिन्न प्रयासों का एक समूह है इसमें शिक्षा को ऊपर उठाने के लिए शिक्षण विधियों का प्रयोग, अनेक सहायक सामग्री प्रयोग, आर्थिक सहायता, प्रशिक्षणों के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में सम्बलन प्रदान करना है जिससे किसी संस्था को या ग्रामीण इलाकों को समृद्ध बनाने में सहायता प्रदान करते है। इस तरह के कार्यक्रम निरन्तर किसी भी क्षेत्र का विकास कर सकते हैं। अतः गांधी विद्या मंदिर ने शैक्षिक सम्बलन हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम की शुरूआत की।

गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर की स्थापना ब्रह्मकालीन स्वामी श्री रामशरणजी महाराजद्वारा 2 अक्टूबर, 1950 में महात्मा गांधी के आदर्शों के अनुरूप शिक्षा, स्वास्थ्य, एवं व्यवसाय की त्रिवेणी लिए ग्रामीण विकास के उद्देश्यों के साथ की गई। गांधीजी के आदर्शों पर स्थापित इस संस्था में सेवा, त्याग, परिश्रम एवं समर्पण के भाव स`सभी कार्य करते हैं। देहाती विश्व विद्यालय के रूप में संकल्पित सह संस्थान

देश के ग्रामीण अंचलों और जन–जन को शिक्षा की दिव्य ज्योति से अवलोकित कर राष्ट्र में नव चेतना का संचार कर रहा है। गांधी विद्या मंदिर की शिक्षा में वैज्ञानिकता और आध्यात्मिकता के साथ साथ मूल्योन्मुखता भी है जो विद्यार्थी को मूल धरातल से जोड़ कर रखती है। ग्रामीण जीवन कृषि एवं पशुपालन कार्य हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र एवं स्थानीय जनता की स्वास्थ्य सेवा के लिए आयुर्वेद विश्व भारती की स्थापना की गई। ग्रामीण क्षेत्रों में संस्कार निर्माण, सेवा, शिक्षा, धार्मिक प्रवृति एवं व्यसन मुक्त जीवन धारा के विकास के कार्य आज भी अनवरत चल रहा है। स्वामी जी ने स्वयं गांवों की पद यात्राएं की, आध्यात्मिक प्रवचन किये। स्वामीजी ने **''कुछ न चाहो काम आ जाओ''** तथा **''कोई और नहीं कोई गैर नहीं''** के आदर्शों को शिक्षा में स्थापित किया। शिक्षा के माध्यम से **'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'** के लिए यह संस्था कार्यशील है। यह संस्थान अनेकों वर्षों में ग्रामीण उत्थान हेतु अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती आ रही है। इसी श्रृंखला में बढ़ते हुए वर्तमान में बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय को सरकार द्वारा सरदारशहर तहसील के 25 राजकीय विद्यालय शैक्षिक सम्बलन हेतु सौंपे गये हैं। इन सभी विद्यालयों के शैक्षिक उन्नयन एवं संवर्धन हेतु महाविद्यालय द्वारा विविध महत्वपूर्ण गतिविधियों को सम्पादित किया जायेगा व किया जा रहा है। इस शैक्षिक संवर्धन कार्यक्रम को एकीकृत रूप प्रदान करने हेतु बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के साथ–साथ गांधी विद्या मंदिर के परिसर में ही संचालित आयुर्वेद विश्वभारती एवं कृषि विज्ञान केन्द्र की भी अहम् भूमिका रहेगी। शैक्षिक सम्बलन कार्य के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों के विकास को देखा जा रहा है –

1. शैक्षिक गतिविधियों का विकास एवं कौशल विकसित करना।
2. ग्रामीणों में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के प्रति जागरूकता एवं उनसे निपटने हेतु अनेक आयुर्वेदिक दवाईयों एवं नुक्शों के माध्यम से उपचार करने की सीख लेना।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं और तरीकों को सीखना।

2. अध्ययन का महत्व :–

आज के भौतिकवादी युग में घटते प्राकृतिक संसाधनों एवं भागदौड़ भरी जिन्दगी में समय बचाने की आवश्यकता बन गई है। इसी क्रम में ग्रामीण इलाकों में शैक्षिक दृष्टिकोण को उजागर करने व सर्वांगीण विकास के लिए सभी क्षेत्रों में विकास होना जरूरी है व ज्ञान होना आवश्यक है। यदि हमें अपनी आनी वाली पीढ़ी को आगे बढ़ाना है तो सभी क्षेत्रों विशेषतः स्वास्थ्य व कृषि क्षेत्रों को भी आगे बढ़ाना होगा जिससे कम से कम समय में अधिकाधिक प्रतिफल लेकर व आमदनी करके हम अपनी आने वाली सम्पूर्ण पीढ़ी को विकास की ओर अग्रसर कर सकेंगे।

विद्यालय स्तर पर –

विद्यालय स्तर पर अध्ययन का महत्व इसलिए हो जाता है क्योंकि बालक व अध्यापकों के मध्य नवीन कार्यों को कैसे करवाया जाये। समस्या समाधान को कैसे किया जाए और अनेक अध्ययन अध्यापन में आने वाली विभिन्न समस्याओं के बारे में विद्यालय स्तर पर अनेक उपयुक्त कार्यक्रमों के माध्यम से कैसे उनका समाधान निकाला जा सकता है यह इस शोध के अन्तर्गत देखा जायेगा जो विद्यालय के चहुंमुखी विकास को दिशा प्रदान करेगा।

ग्रामीण विकास के स्तर पर :–

यदि देश को विकास की ओर अग्रसर करना है तो अपने देश के वासियों को उच्च शिखर की ओर अग्रसर करना होगा। इसलिए हमारा देश ग्राम प्रधान देश है और इन गांवो में छूते अनेक कर्मठ, ज्ञानवान व प्रतिभाओं को बाहर लाने के लिए यह शोध इस कार्यक्रम के माध्यम से बाहर निकालने और प्रतिभाओं को ओर उन्नत बनाने में सहयोगी साबित होगा।

प्रशासकों के संदर्भ में :–

यह शोध उन प्रशासनिक ईकाईयों के प्रशासकों के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा जो इस तरह के अनेक कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार कर रहे हैं अथवा इनके तरह के अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करने के इच्छुक हैं उनको इन क्षेत्र के विकास को किस ओर दिशा प्रदान करनी है इसलिए भी इसकी आवश्यकता और बढ़ जाती है।

3. अध्ययन का औचित्य :–

प्रस्तुत शोध कार्य का औचित्य ऐसे कार्यक्रमों का निहितार्थ एवं मौलिक सृजन कार्यक्रमों में निहित शैक्षिक उपयोग क्या हो सकते हैं को जानने का एक छोटा सा प्रयास है।

शोध का औचित्य और भी बढ़ जाता है जब सम्पूर्ण देश में वर्तमान परिस्थितियों में ग्रामीणों के उत्थान हेतु अनेक कौशलों का विकास माननीय प्रधानमंत्री जी और उनकी सरकार करने का प्रयास कर रही है। इस कार्यक्रम में संस्था द्वारा उन रेगिस्तानी इलाकों में जहां की शैक्षिक, आर्थिक व सामाजिक जीवन शैली को शिक्षा प्रभावित करती है और गुढ़ परम्पराओं को छोड़कर देश के विकास में बाधा उत्पन्न करती है। देश 21वीं सदी में आगे की ओर अग्रसर है वहां कुछ यह इलाके अभी वहीं की वहीं खड़े है। इनको आगे लाने के लिए गांधी विद्या मंदिर के अन्तर्गत संचालित बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई) सरदारशहर ने शैक्षिक सम्बलन हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम की शुरूआत की है। इस शोध की औचित्यता इस कार्यक्रम में 25 गांवों के विकास में निहित है। इसको पता लगाना ही नहीं बल्कि इस कार्यक्रम के अनुरूप आधार और इस कार्यक्रम की औचित्यताओं, महत्व और क्रियाओं से सम्पूर्ण समाज को अवगत कराना और आने वाले भविष्य में अनेक कार्यक्रमों को आधार प्रदान करने से है।

4. अध्ययन के उद्देश्य :–

1. शैक्षिक सम्बलन कार्य हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम के अन्तर्गत हुए विभिन्न प्रशिक्षणों का अध्ययन करना।
2. शैक्षिक सम्बलन कार्य हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम में शिक्षण गुणवत्ता हेतु किए गए विभिन्न कार्यक्रमों का अध्ययन करना।
3. शैक्षिक सम्बलन कार्य हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम में सामाजिक कार्य हेतु किए गए विभिन्न कार्यक्रमों का अध्ययन करना।

4. शैक्षिक सम्बलन कार्य हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा से सम्बन्धित क्षेत्रों में किए गए विभिन्न कार्यों का अध्ययन करना।

5. शैक्षिक सम्बलन कार्य हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्रामीण विकास हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा किए गए कार्यों का अध्ययन करना।

6. शैक्षिक सम्बलन कार्य हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम में भावी योजनाओं हेतु शोधपरक दिशा–निर्देश प्रदान करना।

5. सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :–

1. **सक्सैना, एस. (1976)** ने ***''भारत में शिक्षा योजना प्रारूप एकक उपागम और तकनीकी अध्ययन''*** पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। इन्होंने पाया कि यह अनुसंधान प्रथम पंचवर्षीय योजना (1950-51) के दौरान भारत में प्रचलित शिक्षा उपागम और विधियों का मूल्यांकन का प्रयास करता है। इस अध्ययन को शिक्षा से सम्बन्धित उपागम और विधि तक ही सीमित किया गया है।[१]

2. **बीड़, हरदेव (1990)** ने ***''भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन''*** विषय पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य पंजाब विश्वविद्यालय से किया। इन्होंने अपने अध्ययन में भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन से सम्बन्धित प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक तकनीकी स्तर एवं स्त्री और यौवन शिक्षा के प्रशासन और पर्यवेक्षण से सम्बन्धित तथ्यों का विशेष रूप से प्रयास किया गया।[२]

3. **Rufledt Susan Carol (2009)** ने ***''संयुक्त राज्य भारतीय शिक्षा नीति और सुधार* 1884 *से* 1912 *के मध्य आरक्षण के चलते कैथोलिक भारतीय शिक्षा का जीवन''*** विषय पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। इन्होंने पाया कि 18वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में भारतीय शिक्षा का अस्तित्व कैथोलिक पद्धति के कारण संकट में हो गया। भारतीय शिक्षा सुधारकों ने इस संकट से उभरने के लिए सेन्ट जोसफ कैथोलिक इन्डियन स्कूल को

[1] बुच, एम.बी.(1988–92), द्वितीय सर्वे, ''रिसर्च इन एज्यूकेशन'' पृ.सं. 61
[2] बुच, एम.बी.(1988–92), पंचम सर्वे, ''रिसर्च इन एज्यूकेशन'' पृ.सं. 848

बन्द करने का प्रस्ताव रखा और इनके स्थान पर सरकार द्वारा प्रशासित विद्यालय और औधोगिक प्रशिक्षण संस्थान खोलने का सुझाव दिया। इस शोधकार्य में बताया गया है कि – किस प्रकार कैथोलिक शिक्षा पद्धति ने भारत में अपने विश्वास के बल पर अपनी जीत हासिल की और कैथोलिक शिक्षा आरक्षण के आधार पर विकसित हुई।[3]

4. **रसेल बर्ट्रेंड (2016) ''स्वतंत्र चिंतन में सक्षम बनाये शिक्षा : बर्ट्रेंड रसेल''** इसका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य एक विद्यार्थी को स्वतंत्र चिंतन में सक्षम बनाना होना चाहिए शिक्षा का मतलब सूचना नहीं है।

5. **Felipe pulido (2004) "Integrated Theory of Intelligence"**. : Integrated Theory of Intelligence is a theory of Everything, which includes the concept of Intelligence-consciousness and its place in the make up of the physical universe.

6. <u>अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या</u> :–

शैक्षिक **सम्बलन –**

हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – ''पोषण, प्रबलन, मजबूती प्रदान करना है। इस शोध में भी यह कार्यक्रम के अनुसार किस रूप में शिक्षा हेतु प्रबलन का कार्य कर रहा है इसी रूप में लिया गया है।''

मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश के अनुसार– ''शैक्षिक दृढ़िकरण, प्रबलीकरण बनाने की क्रिया से है।''[4]

नवाचार :–

हिन्दी खोज व शब्दकोश के अनुसार – ''नवीनीकरण अर्थात किसी को नवीन दिशा प्रदान करना है इस शोध में भी शोधकर्ता द्वारा इस कार्यक्रम से शिक्षा में क्या नवाचार लाये जा सकते है इसकी खोज व इसके साथ ग्राम्य उत्थान के लिए क्या नवीन किया जा सकता है कि खोज पर निर्भर है।''

---

[3] Dessertation Abstracts International, Volume – 70, Num - 06

[4] सत्यप्रकाश, डी.(१९८३), मानक अंगेजी हिन्दी कोश पृ.स.– ४३५

मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश के अनुसार– ''नयापन , नवीनता, नुतनता, नई राह निकालने से है।''[6]

एकीकृत :–

हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – ''समाकलित अर्थात किसी के साथ–साथ मिलकर चलाना। इस शोध में भी शोधकर्ता द्वारा इसे शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यवसाय (कृषि एवं पशुपालन) के साथ समग्र ग्राम्य विकास को देखने का प्रयास किया है इसलिए इसे समाकलित या एकीकृत शब्दों का इस्तेमाल किया है।''

मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश के अनुसार– ''संम्पूर्ण करना,समाकलन करना, संकलित अथवा ऐकीकृत से है।''[7]

शोधकर्ता के अनुसार – शैक्षिक सम्बलन से अभिप्राय उन सभी कार्य से है जो शिक्षा की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहायक हो।

7. अध्ययन का परिसीमन :–

यह शोध बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गांधी विद्या मंदिर द्वारा चलाये जा रहे शैक्षिक सम्बलन हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम के अन्तर्गत अगले 18 माह में होने वाले समस्त कार्यक्रमों के विश्लेषण तक सीमित रहेगा।

8. <u>शोधविधि</u> एवं उपकरण :–

प्रस्तुत शोध में विश्लेषणात्मक एवं सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

तथा आवश्यकता अनुसार पर्यवेक्षण एवं साक्षात्कार सूची का प्रयोग किया जायेगा।

९. शोध क्रियान्वयन हेतु कार्य योजना :–

1. महाविद्यालय से उपलब्ध व संस्था से उपलब्ध सम्बन्धित कार्यक्रमों के विभिन्न पत्राचारों, व उद्देश्यों का अध्ययन किया जायेगा।
2. कार्यक्रम में विषय वस्तु सम्बन्धी एवं अन्य कठिनाईयों का अध्ययन कर समाधानों हेतु किए गए प्रयासों का अध्ययन किया जायेगा।
3. विषय को रूचिपूर्ण व सरल करने हेतु महाविद्यालय द्वारा दी गई शिक्षण सहायक सामग्री की औचित्यता का अध्ययन किया जायेगा।
4. ग्रामवासियों का साक्षात्कार के माध्यम से कृषि कार्यों में आने वाली बाधाओं के निपटान हेतु किए जा रहे कार्यों का अध्ययन किया जायेगा।

10- प्रस्तावित शोध प्रबन्ध का अध्याय क्रम :–

प्रथम अध्याय :– शोध की सम्प्रत्यात्मक पृष्ठभूमि, औचित्य, समस्या कथन, परिभाषीकरण, उभरने वाले प्रश्न, उद्देश्य, अभिकल्प, समस्या से सम्बन्धित साहित्य एवं सीमांकन से सम्बन्धित होगा।

द्वितीय अध्याय :– शैक्षिक सम्बलन कार्य हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम के अन्तर्गत हुए विभिन्न प्रशिक्षण।

तृतीय अध्याय :– शैक्षिक सम्बलन कार्य हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम में शिक्षण गुणवत्ता हेतु किए गए विभिन्न कार्यक्रम।

चतुर्थ अध्याय :– शैक्षिक सम्बलन कार्य हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम में सामाजिक कार्य हेतु किए गए विभिन्न कार्यक्रम।

पंचम अध्याय :– शैक्षिक सम्बलन कार्य हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा से सम्बन्धित क्षेत्रों में किए गए विभिन्न कार्य।

षष्ठ अध्याय :– शैक्षिक सम्बलन कार्य हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्रामीण विकास हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा किए गए कार्य

सप्तम् अध्याय :– शैक्षिक सम्बलन कार्य हेतु एकीकृत नवाचार कार्यक्रम में भावी योजनाओं हेतु शोधपरक दिशा–निर्देश।

अष्ठम् अध्याय :– निष्कर्ष, सुझाव, उपयोगिता एवं कार्ययोजना

11. शोधकार्य में लगने वाला समय :–

प्रस्तुत शोधकार्य पूर्ण करने में अनुमानित दो वर्ष का समय लगेगा, जिसका विवरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा रहा है :–

क्र.सं.	**शोधकर्ता द्वारा किये जाने वाले शोधकार्य**	**अनुमानित समय**
1	प्रथम अध्याय	3 माह
2	द्वितीय अध्याय	3 माह
3	तृतीय अध्याय	3 माह
4	चतुर्थ अध्याय	3 माह
5	पंचम अध्याय	3 माह
6	षष्ठ अध्याय	3 माह
7	सप्तम् अध्याय	3 माह
8	अष्ठम् अध्याय	2 माह
9	टंकण एवं बाईडिंग	1 माह
	कुल अवधि	**24 माह**

BIBLIOGRAPHY

1. भट्ट, दिनेश. (1999). – ''शैक्षिक संदर्भ'' पृष्ठ संत्र 82-88

2. Pulido, Felipe. (2004). "Integrated Theory of Intelligence"

3. बुच, एम.बी.(१९८८–९२), पंचम सर्वे, ''रिसर्च इन एज्यूकेशन'' पृ.सं. ८४८

4. बुच, एम.बी.(१९८८–९२), द्वितीय सर्वे, ''रिसर्च इन एज्यूकेशन'' पृ.सं. ६१

5. सत्यप्रकाश, डी.(१९८३), मानक अंगेजी हिन्दी कोश पृ.स.– ४३५ , ७१३ , ७१९

6. http://educationmirror.org/2014/04/13

7. www.supraconsciousnessnetwork.org

8. https://hi.wikipedia.org

9. ebookdirectory.com.

१०. Dessertation Abstracts International, Volume – 70, Num

11. www.samaylive.com/article-analysis-in-hindi/143515/rte-education-children-the central- government-the mother-longue.html.

शोध प्रारूप की स्वीकृति हेतु अनुमोदन

शोध निर्देशक के हस्ताक्षर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर